

Volume - 2

सरस्वती आर गांवित
 पीएनडी शोधार्थी.
 गुजरात युनिवर्सिटी.
 पंजीकरण नंबर-10319
 मार्गदर्शक- डॉ.सुरेश पटेल



पंखुरी सिन्हा कि कहानीयो में चित्रित स्त्री जीवन

पंखुरी सिन्हा बिहार की युवा लेखिका हैं। दो हिंदी कथा संग्रह ज्ञानपीठ से, पांच हिंदी कवितासंग्रह, दो अंग्रेजी कविता संग्रह। कई किताबें प्रकाशनाधीन। कई संग्रहों में रचनाएं संकलित हैं, कई पुरस्कार जीत चुकी हैं। कविता के लिए राजस्थान पत्रिका का 2016 का पहला पुरस्कार, कुमुद टिक्कू कथा पुरस्कार 2020, मथुरा कुमार गुंजन स्मृति पुरस्कार 2019, प्रतिलिपि कविता सम्मान 2018, राजीव गांधी एक्सीलेंस अवार्ड 2013, पहले कहानी संग्रह, 'कोई भी दिन', को 2007 का चित्रा कुमार शैलेश मटियानी सम्मान, 'कोबरा: गॉड ऐट मर्सी', डाक्यूमेंट्री का स्क्रिप्ट लेखन, जिसे 1 के यू जी सी, फिल्म महोत्सव में, सर्वश्रेष्ठ फिल्म का खिताब मिला 'एक नया मौन, एक नया उद्घोष', कविता पर, 1995 का गिरिजा कुमार माथुर स्मृति पुरस्कार, 1993 में, CBSE बोर्ड, कक्षा बारहवीं में, हिंदी में सर्वोच्च अंक पाने के लिए, भारत गौरव सम्मान. अंग्रेजी लेखन के लिए रूस, रोमानिया, इटली और नाइजीरिया द्वारा सम्मानित। अभी अभी, इटली की एक कविता प्रतियोगिता में चौथे कविता संग्रह 'ओसिल सुबहें' की एक कविता द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित। कविताओं का देश और दुनिया की चौबीस से अधिक भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।

आज हमारा समाज इतना क्रूर एवं अहंवादी बन चुका है कि स्त्री को उसका उचित स्थान देना नहीं चाहता है। जबकि स्त्री समाज का अहं हिस्सा है, यह कहा जाना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि स्त्री समाज का आधार है, नींव है, शक्ति है, सृष्टि को रचने वाली है। कवियत्रि के कहानी के कुछ अंश यहां प्रस्थापित किये हैं:

'किसी और से प्यार करती हूँ, ये शादी जबर्दस्ती कर दी गई है।' 'देखिये, ये शादी मेरी मर्जी के खिलाफ हुई है! मैं कहती रही लेकिन उन्होंने आप के साथ बांध दिया, मैं किसी और के प्रेम में हूँ और उसे नहीं भूल सकती!'

शादी की पहली रात को, इस तरह के डायलॉग बोलने सुनने की घटनाएं इधर कुछ ज्यादा ही घटने लगीं हैं! दरअसल, लड़कियाँ अब पहली बार बोलने लगीं हैं! जो बात वे अपने अभिभावकों को नहीं समझा पातीं, बड़ी आसानी से अपने अजनबी पति को बता देती हैं!

लेकिन, "हम किसी और को चाहते हैं! हम नहीं चाहते हमारी वजह से आप की जिन्दगी खराब हो, बस आप मेरे घर वालों से मत बताईयेगा, वो मेरी जान ले लेंगे!" जैसा फिल्म मुगले-आज़म, हीरोइन जहाँ आरा, टाईप डायलाग, पिछले तीन दिन की त्रासद, दर्दनाक नाटकीयता के बाद, मेरे सामने बैठी मेरी नवविवाहिता पत्नी मुझसे कहेगी, यह एक ऐसा ऐन्तिक्लाइमेक्स था, जिसकी मैं कल्पना तक नहीं कर सकता था!



Shree Naroda Kelavani Mandal Sanchalit

SMT. A.P. PATEL ARTS & LATE SHREE N.P. PATEL COMMERCE COLLEGE

Shree Prahladbhai Kashidas Patel Vidhya Sankul, Naroda, Ahmedabad-382330.

Reaccredited by NAAC with B Grade Third Cycle | Accredited - by 'AAA' = 4 Star

Phone : 079-22816582, M.: 8866388134 E-mail : shodhsanchay@gmail.com

ISSN:3049-236X(Online)



Volume - 2

जी हाँ, मेरी! नवविवाहिता पत्नी! यह जो सुकोमल, सुशील सी दिखती, बेहद लजीली, अति सुंदर कन्या, गर्दन झुकाये मेरे सामने बैठी थी, अभी अभी जलती हुई आग के सात फेरे लिवा कर, मुझसे ब्याही गई थी! लगभग तीन घंटे पहले, मैंने ही अपने दाहिने हाथ के अंगूठे से, इसकी सुसज्जित माँग में वह लाल सिंदूर डाला था, जो पूरे कमरे में दमक रहा था!

जी हाँ, ठीक तीन दिन पहले, जब सूरज पटना जंक्सन की टीन की छत के पीछे डूबने की तैयारी कर रहा था, और चाय वाला घिरते झुटपुटे में बत्ती जलाने के लिए स्विच की ओर हाथ बढ़ा रहा था, मैं प्लेटफार्म नम्बर एक से सीधा बाहर निकलता हुआ, अचानक धर लिया गया, अर्थात् अगवा कर लिया गया!

दो जोड़ी मज़बूत हथेलियों ने मेरे दोनों कन्धों को कसकर पकड़ा, मेरे सिर के ऊपर फौरन एक चादर डाली गई, किसी की बाँह ने मेरी कमर को इस तरह जकड़ा, जैसे अक्सर लफंगे धूँध -लके में राह चलती कमसिनों की कमर को मुट्ठी में भर, नौ दो ग्यारह हो जाते थे, लेकिन मुझसे एक सख्त आवाज़ ने कहा था, 'भागने की कोई कोशिश बेवकूफी होगी। शान्तिपूर्वक हमारे साथ चलो, हम तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ेगे!' गाड़ी अर्थात् कार बमुश्किल छः कदम की दूरी पर रही होगी! उसके चलते ही मेरे सिर पर से चादर हटा दी गई थी! दुबारा रौशनी क्या समूची दुनिया को देखना कुछ इस तरह था, जैसे एक झटके में मौत के द्वारा निगला और उगला गया होऊँ! स्टेशन के फाटक पर अदने से दिखते दो सिपाही खड़े थे, लेकिन तब तक मेरे दोनो घुटनों के नीचे पिस्तौल की नली लगाई जा चुकी थी, और कह दिया गया था कि मैं कोई शोर गुल न करूँ! हालांकि दोनो की ही कोई ज़रूरत नहीं थी! मैं इतना भौंचक था, और इस हद तक सहमा हुआ, कि मुझे लग रहा था कि मेरी आवाज़ हमेशा के लिए चली गई है, और अगर फिर कभी मैं बोल सका, तो यह कोई जादुई करामात होगी, या ईश्वरीय कृपा! जबकि, ईश्वर में मेरा विश्वास कम ही था, फिर भी उस वक्त मैं हर उस दैवी शक्ति को स्मरण कर रहा था, जिसमें मुझे मेरे इस संकट से उबारने की कोई भी क्षमता दिखती थी! आखिर, मेरे जैसे चुप्पा, शरीफ़, और लगभग निरीह प्राणी के ऐसे ताकतवर दुश्मन कौन हो सकते थे? क्या इन लोगों ने मेरे द्वारा लिखे तमाम वो लेख पढ़ लिये थे जो बालू माफिया, गिट्टी माफिया, ईंट माफिया, मिट्टी माफिया, पानी माफिया, पानी और सड़क माफिया के खिलाफ मैंने ताबड़तोड़ लिखे थे और दश की चुनिंदा मार्क्सवादी पत्रिकाओं ने जिन्हें हाथों हाथ छपा था? क्या गुंडे भी बौद्धिक हो गए थे?

पंखुरी सिन्हा के यहाँ सबसे अधिक स्त्री जीवन से संबन्धित कवितायें हैं, जाहिर है जब स्त्री जीवन की कवितायें हैं तो प्रेम की भी कवितायें होंगी! पंखुरी जी प्रेम में हुकुम को नहीं मानतीं। प्रेम में हुकुम मानना सबसे मुश्किल व्यापार होता है और वह यह भी कहती हैं कि यदि प्रेम में बहुत छानबीन की जाए तो प्रेम फीका पड़ जाता है। उसका रंग उतर जाता है। इन प्रेम कविताओं में भी इनके प्रतिरोधी स्वर को सुना जा सकता है। वे लड़कियों को सावधान करते हुए कहती हैं—

“बड़ा नुकीला होता है

बहुत धारदार

ये हँसी वाला हथियार



और बहुत सुलभ भी

एहति यात बरतें

जानते

कब आघात कर रही है हँसी।”

‘ओसिल सुबहें’ काव्य-संग्रह में ऐसे ही बदलते और दंश भरे समय की कविताएँ हैं। कवयित्री पंखुरी सिन्हा ने इस समय के घाव को, उसके जहरीले डंक को शब्द दिया है। समय के इस जहरीले डंक को ‘सरकारी कला भवन और तलाक़शुदा औरतें’ कविता में भी बहुत बारीकी से दिखाया गया है। ‘ओसिल सुबहें’ कवयित्री पंखुरी सिन्हा का चौथा काव्य-संग्रह है। ये कविता के साथ-साथ कहानियाँ भी लिखती हैं, और बहुत अच्छी कहानियाँ लिखती हैं। लेकिन आज इनके कथा-संग्रह पर नहीं, काव्य-संग्रह पर बातें करनी हैं और वह भी ‘ओसिल सुबहें’ पर। इसमें लगभग 108 कवितायें संकलित हैं। इस संग्रह की सबसे लंबी कविता ‘बोको हराम के सारे अपहरण’ है। यह कविता मन में कई सवाल खड़ा करती है।

इस संग्रह की पहली कविता प्रकृति पर है और अंतिम स्त्री पर। यानी पंखुरी जी ने कविता की शुरुआत और अंत दोनों स्त्री से की है। हम फेसबुक पर भी अक्सर यह देखते रहते हैं कि पंखुरी जी का प्रकृति से बहुत गहरा लगाव है। इन्हें पेड़-पौधे, पशु-पक्षी ज्यादा भाते हैं। पेड़ों से इनका पुराना परिचय है। ये प्रकृति के रहस्य को जानने के पूरी कोशिश करती हैं। उन्हें यह बात बहुत चकित करती है कि अमुक पेड़ का पपीता बहुत अच्छा है, तो अमुक का कच्चा। एक ही साथ दो पेड़ हैं, लेकिन एक का फल मीठा है तो दूसरे का फीका। प्रकृति का यह रहस्य कवयित्री को अचंभा में डाल देता है। संग्रह की अंतिम कविता ‘यूजेनिक्स’ है। ‘यूजेनिक्स’ मानव आबादी की आनुवांशिक गुणवत्ता को सुधारने का विश्वास और अभ्यास है। यह वांछित लक्षण वाले लोगों को उच्च प्रजनन को बढ़ावा देने और कम वांछित या अवांछित लक्षण वाले लोगों के प्रजनन को कम करने के माध्यम से मानव आनुवांशिक गुणों में सुधार की वकालत करने वाला एक सामाजिक दर्शन है। प्लेटो ने भी इस selective breeding (चयनात्मक प्रजनन) का समर्थन किया था। वास्तव में ‘यूजेनिक्स’ मनुष्य जाति के लिए बहुत खतरनाक चीज है। यह मानव और सृष्टि विरोधी नियम है। यदि इस पर अमल किया जाए तो यह मनुष्य जाति को खत्म कर देगा। इसे आसान भाषा में कहें तो यदि बीजू आम खत्म हो जाये तो आम की प्रजातियाँ ही खत्म हो जाएगी। कवयित्री कहती है:-

भ्रूण हत्या कानूनन अपराध है, इसके बावजूद हत्या हो रही है। गर्भ गिरवाया जा रहा है। कवयित्री भ्रूण हत्या के साथ-साथ इस बात से ज्यादा चिंतित है कि ‘यूजेनिक्स’ को हत्या की किस कोटी में रखा जाए! भ्रूण हत्या में भ्रूण बनने के बाद हत्या की जाती है, लेकिन यहाँ तो भ्रूण ही नहीं बनने दिया जाता।

पंखुरीजी औरतों की लड़ाई लड़ती हैं। वे इस जमीन की लड़ाई लड़ती हैं कि ‘बिना सिंदूर की मांग’ और ‘बिना संतान की औरत’ भी मलकाइन हो सकती है। हमारे समाज में विधवा और बाँझ औरत को न तो घर की मालकिन ही माना जाता है और न ही उसे किसी शुभ काम में शामिल किया जाता है। पंखुरी जी इस कुप्रथा का विरोध करती हैं। यह हमारे समाज की सबसे बड़ी बिडम्बना है कि जीवन में स्वाद इन्हीं स्त्रियों की वजह से है, लेकिन यही वर्षों-वर्षों से

धरती की तरह सारे पदचाप सुनती-सहती आ रही है। इनकी कविताओं में एक छटपटाहट, एक बेचैनी है। वे अपने प्रबुद्ध कवियों से प्रश्न भी करती हैं। दरअसल यह प्रश्न सिर्फ पंखुरी जी का नहीं है, यह उन तमाम युवा कवयित्रियों का है, जो कविता लिख रही हैं। आप भी इस सामूहिक प्रश्न का सामना कीजिये।

समकालीन महिला कहानीकारों ने नगरीय परिवेश के साथ-साथ ग्रामीण महिलाओं को भी जागृत किया है। अपनी कहानियों में आदिवासी समाज के इर्द-गिर्द के साथ जो जीवंत घटनाएँ घटी, उन्हें आदिवासी स्त्री के प्रतिरोध के रूप में दर्शाया है। स्त्री ने पहले अपनी पीड़ा तथा शोषण के खिलाफ आवाज़ उठाया, फिर मुक्ति का आन्दोलन खड़ा करके अपनी परंपरा, आडम्बरता एवं कुरीतियों की आड़ में पिसती नारी, स्वतंत्रता पाने के लिए लड़ी, मुक्ति के बाद फिर अपने अधिकारों के लिए प्रतिरोध बुलन्द की। आज नई सदी की नारी बराबरी या समानता एवं अपनी सुरक्षा के लिए संघर्ष करती हुई दिखाई दे रही है। इतना सब कुछ होने के बावजूद भी क्या आज इस देश में नारी सुरक्षित है? इस प्रश्न के उत्तर के लिए हमारा समाज, नेता गण और समाज के अभिवादक मौन है। अंततः इस युग में स्वतंत्रता, समानता, अधिकार तथा ज्ञान के क्षेत्र में स्त्री मजबूत तो कहलाती है, परन्तु शारीरिक दृष्टि से और भी तैयार होना ज़रूरी है, क्योंकि लालची, दुष्ट अत्याचारियों के साथ मुकाबला करना अत्यावश्यक है।

संदर्भ सूची:-

1. पंखुरी सिंहा ,कोई भी दिन, अनन्य प्रकाशन नई दिल्ली.
2. 'समकालीन हिन्दी कहानी का स्त्री पक्ष' अनन्य प्रकाशन नई दिल्ली.
3. महिला कहानीकारों की कहानियों का विकीपीडिया, हिन्दी भारत कोश